License Information

Study Notes - Book Intros (Tyndale) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes - Book Intros (Tyndale)

यशायाह

क्या परमेश्वर हमें उन समस्याओं से बचा सकते हैं, जिनका हम सामना करते हैं? क्या वह हमें जगत की दमनकारी शक्तियों से बचा सकते हैं? क्या वह हमारे पाप की शक्ति को तोड़कर हमें उसके परिणामों से निपटने में मदद कर सकते हैं? यशायाह इन सवालों का जवाब एक अद्‌भुत *हाँ* के साथ देता है। भविष्यद्वक्ता के वचन कभी-कभी हमें अपनी सुंदरता से अभिभूत कर देते हैं। और कभी, उनके भेदनेवाले वचन हमारे पाप को उजागर करते हैं और हमें अपने घुटनों पर ला देते हैं। यशायाह की अपनी सेवकाई की शुरुआत परमेश्वर के प्रेम, महानता, और पवित्रता के दर्शन के साथ हुई थी। यह दर्शन- यशायाह की पूरी पुस्तक के साथ- मानव हृदय को दोषी ठहराता है, और हमें क्षमा, सिद्ध होने और जीवन के उद्देश्य के लिए केवल हमारे सृष्टिकर्ता पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करता है।

पृष्ठभूमि

राजा उज्जियाह की मृत्यु के समय (740 ई. पू.), यहूदा के दक्षिणी राज्य को एक बड़े संकट का सामना करना पड़ा। अश्शूर का साम्राज्य, जो लगभग पचास वर्षों से निष्क्रिय था, अब फिर से आगे बढ़ने लगा था। अश्शूर की सेना अपने गृहस्थान से, जो अब उत्तरी इराक है, दक्षिण-पश्चिम की ओर अपने अंतिम गंतव्य मिस्र की ओर बढ़ गई थी। भूमध्यसागर के तट के छोटे देश जिनमें इस्राएल और यहूदा शामिल थे, अश्शूर के रास्ते में खड़े थे। अश्शूर ने गलील और यरदन नदी के पूर्व इस्राएल के अधिकांश क्षेत्र को ले लिया था। लेकिन वे केवल इस्राएल, यहूदा और क्षेत्र के अन्य सभी छोटे राष्ट्रों के पूर्ण नियंत्रण से ही संतुष्ट होंगे।

जब तक यहूदा का राजा उज्जियाह जीवित था, यहूदा इस संकट की उपेक्षा करने में सक्षम था। कुल मिलाकर, उज्जियाह एक अच्छा और प्रभावी राजा था, उसके पास एक शक्तिशाली सेना थी (2 इति 26:11–15), और उसके लोगों को आशा थी कि वह किसी तरह से अश्शूरियों से राष्ट्र को बचा सकता है। लेकिन उज्जियाह की मृत्यु के बाद, दुष्ट शासकों ने राज किया। नेतृत्व के कमी के इस संकट के दौरान, परमेश्वर ने यशायाह को यह दर्शन दिया जिसने उसकी सेवकाई की शुरुआत की और अगले चालीस वर्षों तक उसे मार्गदर्शन दिया (यशा 6)।

इस बीच, अश्शूर भूमध्यसागर के तट से दक्षिण की ओर बढ़ता गया, और एक के बाद एक छोटे राष्ट्रों पर विजय प्राप्त करता गया। इस समय के दौरान, अश्शूर के संबंध में यहूदा की नीति तुष्टिकरण और टकराव के बीच झूलती रही। भविष्यद्वक्ता यशायाह एक अति-आवश्यक संदेश लाता है: परमेश्वर पूर्णरूप से विश्वसनीय है, और परमेश्वर के अलावा किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति पर भरोसा करना पूरी तरह से मूर्खता है।

दुर्भाग्य से, यशायाह के मुख्य संदेश पर हमेशा ध्यान नहीं दिया गया। 734 ई.पू. के आसपास, इस्राएल ने अश्शूर के खिलाफ खड़े होने के लिए अराम के साथ एक गठबंधन बनाया। जब यहूदा के राजा आहाज ने इस गठबंधन में शामिल होने से इनकार कर दिया, तो इस्राएल और अराम ने आहाज को उनके साथ शामिल होने पर मजबूर करने के लिए यहूदा पर हमला कर दिया। इस संकट से सामना करते हुए, आहाज ने परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय (यशा 7:1–12) अश्शूरियों को उसे बचाने के लिए बुलाया (2 इति 28:16–21)। हालाँकि अश्शूर के राजा ने अराम और इस्राएल को पराजित किया, लेकिन उसने यहूदा को भी अपने अधीन कर लिया और उस पर भारी कर लगा दिया। कुछ ही वर्षों बाद (722 ई.पू.), अश्शूर ने इस्राएल के राज्य को फिर से पराजित किया और उसके अधिकांश लोगों को बँधुवाई में भेज दिया (2 रा 17:5–18)।

701 ई. पू. में, राजा हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान, अश्शूर ने फिर से यहूदा पर आक्रमण किया। इस बार, यहूदा ने परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर भरोसा किया और वादे के अनुसार परमेश्वर ने देश को अश्शूर की सेना से बचा लिया (37:21–36)।

दुःख की बात है कि परमेश्वर के लोग उनके प्रति विश्वसनीय नहीं रहे। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने यहूदा को अश्शूर के उत्तराधिकारी बाबेल से पराजित होने दिया (605–586 ई. पू.)। यहूदा के विनाश और बाबेल की बँधुवाई का परमेश्वर की पूर्ण विश्वसनीयता के संदर्भ में क्या अर्थ होगा, जिसकी घोषणा यशायाह ने की थी? यशायाह ने इसका भी उत्तर दिया: परमेश्वर अवश्य ही यहूदा की दुष्टता का दण्ड देगा। लेकिन वह शेष बचे हुए लोगो को संरक्षित भी करेंगे जो एक दिन पवित्र देश की ओर लौट आएँगे। यह वापसी उनकी किसी विश्वासयोग्यता के कारण नहीं होगी; यह परमेश्वर के अनुग्रह का एक कार्य होगा।

बँधुवाई से लौटने पर (538 ई.पू.; एज्रा 1:1–4 देखें), लोग फिर से दुष्टता की ओर प्रलोभित हुए, इस बार झूठे धर्मों के द्वारा जिसने उनकी अनुपस्थिति के दौरान उनके देश में जड़ें जमा ली थीं। यशायाह ने दिखाया कि जिस उदार परमेश्वर ने उन्हें बचाया था, वही पवित्र परमेश्वर भी है, जिन्होंने उनकी आज्ञाकारिता, धार्मिकता और एकनिष्ठ भक्ति की मांग की।

सारांश

यशायाह 1–39 उज्जियाह की मृत्यु (740 ई.पू.) से 701 ई.पू. तक की अवधि का वर्णन है। पुस्तक का परिचय (अध्याय 1–5) यहूदा की पाप और अन्याय की वर्तमान स्थिति की तुलना परमेश्वर की उपस्थिति में धन्य अस्तित्व से करता है जिसके लिए उन्हें मूल रूप से बुलाया गया था। यह तुलना एक प्रश्न उठाती है: वर्तमान भ्रष्टाचार कभी भी महिमा, पवित्रता और फलदायीता में कैसे परिवर्तित हो सकती है? भविष्यद्वक्ता अध्याय 6 में उत्तर देता है, जब वह अपने स्वयं के नवीकरण और बुलाहट के उदाहरण का उपयोग यह बताने के लिए करता है कि कैसे एक परिवर्तन देश भर में भी हो सकता है। लेकिन, अगर यहूदा ऐसे नवीनीकरण का अनुभव करना चाहता था, तो उसे अपने पाप के मार्गों से फिरना और परमेश्वर पर भरोसा करना सीखना होगा। पूरे अध्याय 13–35 के दौरान भविष्यद्वक्ता विभिन्न साहित्यिक रूपों और जीवन की परिस्थितियों का उपयोग इस बात की पुष्टि करने के लिए करता है कि परमेश्वर ही एकमात्र विश्वसनीय हैं; और परमेश्वर के स्थान पर आसपास के किसी भी राष्ट्र पर भरोसा करना अत्यधिक मूर्खता को दर्शाता है। यशायाह ने इस संदेश को अश्शूर के साथ हुए अनुभवों के दो ऐतिहासिक विवरणों के बीच रखा है: अध्याय 7–12 में राजा आहाज का अनुभव और अध्याय 36–39 में राजा हिजकिय्याह का अनुभव। जब आहाज परमेश्वर पर भरोसा करने में विफल रहा, तो विपत्ति आ पड़ी। इसके विपरीत, उसके बेटे हिजकिय्याह ने परमेश्वर पर भरोसा किया, और एक बड़ा बचाव देखा। हालांकि, हिजकिय्याह के जीवन में भी दुर्बलता का समय आया था (अध्याय 39), जिसने बाद में हुई यहूदा की हार और बाबेल की बँधुवाई के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

यशायाह 40–55 उन प्रश्नों को संबोधित करता है जो यहूदा के 586 ई.पू. में बाबेल की बँधुवाई के दौरान उठेंगे। क्या बँधुवाई का अर्थ यह है कि परमेश्वर पराजित हो गए, या तो बाबेलियों के द्वारा या यहूदा के पाप के द्वारा? क्या यहूदा के लिए परमेश्वर का उद्देश्य विफल रहा, और क्या वह इसके बारे में कुछ भी करने में असहाय है? अध्याय 40–48 में, यशायाह बताता है कि परमेश्वर किसी भी मूर्ति-देवता से अनंत रूप से श्रेष्ठ है, और उसके लोग इसका प्रमाण होंगे, जब परमेश्वर उन्हें बाबेल के अंततः असहाय हाथों से छुड़ा लेंगे। अध्याय 49–55 में, भविष्यद्वक्ता यहूदा के पाप के गहरे प्रश्न को संबोधित करता है। जिस प्रकार परमेश्वर ने यहूदा को बाबेल से बचाया, उसी प्रकार वह शेष बचे हुए लोगों को पाप की दास बनाने वाली शक्ति से छुड़ाना भी चाहते हैं; वह अपने सेवक की मृत्यु के माध्यम से इसे पूरा करेगें।

यशायाह 56–66 539 ई. पू. में यहूदा की बँधुवाई समाप्त होने के बाद उनके अनुभव को संबोधित करता है। परमेश्वर ने वादे के अनुसार बचे हुए लोगों को बँधुवाई से छुड़ाया था; अब उन्हें पवित्र, धर्मी, और निर्दोष होने की आवश्यकता थी। परमेश्वर के सेवकों को अंधकार और भ्रष्टता में चलना जारी नहीं रखना चाहिए, क्योंकि वे व्यवहार और कार्य ही सर्वप्रथम बँधुवाई का कारण बने थे। जब यशायाह पाप से बचाव की बात करता है, परमेश्वर के अपने पवित्र और धर्मी चरित्र का प्रकाश उनके लोगों में चमकता है। परिणामस्वरूप, वे सभी राष्ट्र जिन पर इस्राएल ने एक समय पर परमेश्वर के स्थान पर भरोसा किया था, अब इस्राएल से परमेश्वर के मार्गों को सीखने के लिए यरूशलेम आएंगे।

यशायाह

लेखकत्व

यशायाह की पुस्तक तीन अलग-अलग ऐतिहासिक स्थितियों को संबोधित करती है, उनमें से दो भविष्यद्वक्ता के अपने जीवनकाल से परे हैं। परिणामस्वरूप, कई विद्वानों ने तर्क दिया है कि भविष्यद्वक्ता यशायाह ने पूरी पुस्तक नहीं लिखी होगी; यह दृष्टिकोण 1800 के दशक के मध्य से प्रचलित है। हालांकि, यदि परमेश्वर की प्रेरणा एक वास्तविकता है, तो भविष्यवाणी भी एक वास्तविक संभावना है, इसलिए यह कोई समस्या नहीं है कि पुस्तक के कुछ भाग यह बताते हैं कि यशायाह के बाद के भविष्य में क्या होने वाला था। इसके अलावा, पुस्तक एक उल्लेखनीय साहित्यिक समानता को प्रदर्शित करती है। जब यीशु और नए नियम के लेखक यशायाह की पुस्तक से उद्धरण देते हैं, तो वे लगातार दावा करते हैं कि वे उसी बात का उल्लेख कर रहे हैं जिसे भविष्यवक्ता यशायाह ने कहा है (देखें, उदाहरण के लिए, मत्ती 8:17; 12:17–21; लूका 3:4–6; प्रेरि 8:28–35; रोम 10:16)।

लिखने की तिथि

अध्याय 6–39 के ऐतिहासिक संदर्भों से यह प्रतीत होती है कि इन विषयवस्तुओं को 740 ई.पू. में उज्जियाह की मृत्यु और 701 ई.पू. में सन्हेरीब के यरूशलेम से पीछे हटने के बीच के अड़तीस वर्षों के दौरान विभिन्न समय पर दर्ज किया गया था। अध्याय 40–66 के सरल, ध्यानपूर्ण और चिंतनशील गीतात्मक शैली के कारण, यह संभव लगता है कि 701 ई.पू. और इन अध्यायों के लेखन के बीच समय की एक अवधि बीत गई थी। हम नहीं जानते कि यशायाह की मृत्यु कब हुई थी, लेकिन मान्यता के अनुसार उसकी मृत्यु मनश्शे के एकमात्र शासनकाल (686–642 ई. पू.) के दौरान हुई थी। इस प्रकार यह संभव है कि अध्याय 1–39 के लेखन और अध्याय 40–66 के लेखन के बीच पंद्रह वर्ष से अधिक का समय बीत गया हो।

साहित्यिक शैलियां

यशायाह में उप-शैलियों की एक समृद्ध श्रृंखला शामिल है:

- न्यायिक भाषण जो इस्राएल को चेतावनी देते हैं कि परमेश्वर उन्हें उनके पापों के लिए दंडित करेंगे (9:8–21);
- हाय की भविष्यवाणियाँ जो देश की निकट मृत्यु पर विलाप करती हैं (5:8–30; 29:1–12; 31:1–9);
- दृष्टांत जो सादृश्य द्वारा सिखाते हैं (5:1–8; 27:2–6);
- किसी मामले को साबित करने के लिए सुनवाई के भाषण (41:21–29);
- भविष्य की आशा के लिए उद्धार की भविष्यवाणियां (2:1–5; 32:1–20; 60:1–22);
- परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के लिए स्तुति के भजन (12:1–6; 26:1–6);
- विदेशी राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियां (15:1–16:14; 23:1–18);
- आने वाले राजा, मसीहा की भविष्यवाणियां (9:1–7; 11:1–9);
- सेवक के गीत एक ऐसे व्यक्ति के बारे में जो दूसरों के पापों के लिए कष्ट उठाएगा (42:1–9; 52:13–53:12); और
- वर्तमान की घटनाओं के वर्णन (36:1–22; 39:1–8)।

अर्थ और संदेश

यशायाह की पुस्तक को बाइबिल का एक लघु रूप कहा जा सकता है। किसी भी अन्य पुराने नियम की पुस्तक की तुलना में इसमें नए नियम की अधिक अधिछवि है। यशायाह हमें परमेश्वर की एक एसी छवि देता है जो अद्वितीय और *पारलौकिक* (हमारे अनुभव से परे) है। फिर भी पवित्र और महान परमेश्वर स्वयं को प्रकट करते हैं और *इम्मानुएल* ("परमेश्वर हमारे साथ है," 7:14) होने की इच्छा रखते हैं। इसलिए, पारलौकिक परमेश्वर *अंतर्निहित* (निकट) भी है। परमेश्वर की निकटता यशायाह के पाठकों को (देह में) *अवतरित* परमेश्वर, यीशु मसीह को प्राप्त करने के लिए तैयार करती है, जो वास्तव में इम्मानुएल है (मत्ती 1:21–23 देखें)।

यशायाह मूर्तिपूजा की मूर्खता का सीधा सामना करता है। वह किसी भी सृजित वस्तु में परमेश्वर को सीमित करने या अपने स्वार्थ के लिए परमेश्वर को नियंत्रित करने का प्रयास करने की मूर्खता को उजागर करता है। परमेश्वर हमें जो आशीष देना चाहते है, उन्हें प्राप्त करने का एकमात्र तरीका हमारा आत्मसमर्पण और विश्वास है। हालांकि, मनुष्य की आत्मा इसका कठोरता से विरोध करती है। हम किसी भी वस्तु या किसी भी अन्य व्यक्ति पर भरोसा करना पसंद करेंगे, उस परमेश्वर के अलावा जो हमारे नियंत्रण से परे हैं। जो लोग हठपूर्वक सच्चे परमेश्वर के अधीन होने से इनकार करते हैं और झूठे देवताओं की ओर मुड़ते हैं, वे परमेश्वर से दूर हो जाते हैं और उनके न्याय का सामना करते हैं।

भविष्यद्वक्ता बँधुवाई के माध्यम से पाप से पीड़ित अपने लोगों पर परमेश्वर के न्याय की कहानी को बताता है। हालांकि, परमेश्वर अनुग्रह से अपने लोगों के पास लौटते हैं और यह घोषणा करते हैं कि वह उन्हें पूरी तरह से त्याग नहीं देंगे। इसके बजाय, वह शेष बचे लोगों को शुद्ध और संरक्षित करेंगे, जो राष्ट्रों के बीच उनकी महिमा करेंगे और यह प्रदर्शित करेंगे कि केवल वहीं सच्चे और जीवित परमेश्वर हैं।

परमेश्वर का राज्य एक नए सिय्योन (नए यरूशलेम) में केन्द्रित होगा, जो विश्वासियों के एक नए समुदाय से आबाद होगा और परमेश्वर के धर्मी सेवक, मसीह द्वारा शासित होगा। यह राज्य अत्याचार और अन्याय की शक्ति पर नहीं बल्कि प्रेम की शक्ति पर निर्मित होगा। केवल धर्मी ही इस नए समुदाय का हिस्सा बन सकते हैं। वही अनुग्रह जो परमेश्वर के लोगों को उनके पाप के परिणामों से बचाता है, उनमें परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता भी उत्पन्न करता है। परिणामस्वरूप, वे परमेश्वर की महिमा करेंगे और जगत को रूपांतरित कर देंगे।